पतझर में टूटी पत्तियाँ

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'झेन की देन' पाठ में लेखक ने जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

Answer:

लेखक ने जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगाने की बात इसलिए कही है क्योंकि वे तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं। महीने के काम को एक दिन में पूरा करना चाहते हैं। अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा के चलते वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। कार्य की अधिकता के कारण ऐसा लगता है कि अब वहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है, कोई बोलता नहीं, बकता है। जब वे अकेले पड़ जाते हैं, तो वे स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं। उन्होंने स्वयं को विकसित देशों की पहली पंक्ति में लाने की ठान ली है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

'गिन्नी का सोना' पाठ में शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

Answer:

शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से की गई है क्योंकि शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने की तरह शुद्ध और पवित्र होते हैं। जिस प्रकार शुद्ध सोने में कोई मिलावट नहीं होती उसी प्रकार शुद्ध आदर्श भी व्यावहारिकता की मिलावट से रहित होते हैं। व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से की गई है क्योंकि जिस प्रकार शुद्ध सोने में ताँबा मिलाकर उसे मज़बूती दी जाती है और उसमें चमक उत्पन्न की जाती है, उसी प्रकार आदर्शों में व्यावहारिकता मिलाकर उसे समाजोपयोगी बनाया जाता है। वैसे ही जैसे ताँबा मिला सोना ही आभूषण बनाने योग्य होता है। जीवन केवल कोरे आदर्शों से नहीं चलता, जीवन में आदर्शों के साथ-साथ व्यावहारिकता का होना भी आवश्यक है। इससे आदर्शों को समाज में स्थापित करना आसान हो जाता है और समाज का रूप निखर जाता है, किंतु इसमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि व्यावहारिकता की मात्रा अधिक न हो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 3.

'झेन की देन' पाठ में जापानी लोगों को मानसिक रोग होने के क्या-क्या कारण बताए गए हैं? आप इनसे कहाँ तक सहमत हैं? तर्कसहित लिखिए।

Answer:

लेखक के मित्र ने जापान में बढ़ते मानसिक रोग का मुख्य कारण बताया है– जापानियों द्वारा अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करना। इस प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने अपनी दैनिक कार्यों (दिनचर्या) की गति बढ़ा दी है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह काम नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया जाए, तो उनका मानसिक संतुलन बिगड़ना अवश्यंभावी है। मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें शांत एवं तनाव मुक्त रखना आवश्यक है।

Question 4.

'टी सेरेमनी' की तैयारी और उसके प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

Answer:

जापानी लोग 'टी सेरेमनी' को चा-नो-यू कहते हैं। 'टी सेरेमनी' का प्रबंध छह मंज़िला इमारत के सबसे ऊपर बनाई गई पर्णकुटी में था। जिसकी छत दफ़्ती की दीवारों वाली थी। वह चटाई की ज़मीन वाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर एक बेढब-सा मिट्टी का बर्तन था। उसमें पानी भरा हुआ था, ताकि जो भी व्यक्ति इसमें प्रवेश करे वह हाथ-पाँव धोकर तौलिए से पोंछकर अंदर जाए। वहाँ बैठा मेज़बान उन्हें देखकर खड़ा हो गया। कमर झुकाकर उसने प्रणाम किया और स्वागत किया। बैठने की जगह दिखाकर उसने अँगीठी सुलगाई और उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से बरतन लाकर उसने उन्हें तौलिए से साफ़ किया। ये सभी क्रियाएँ इतने गरिमापूर्ण तरीके से की गईं कि ऐसा लगा माना चारों तरफ़ से जयजयवंती के सुर फूट रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था। चाय प्यालों में भरकर उनके सामने रख दी। इस पूरी प्रक्रिया में मुख्य बात थी शांति कायम रखना इसीलिए यहाँ तीन से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता है। प्यालों में दो घूँट से अधिक चाय नहीं होती और इसी चाय को दो-तीन घंटों में पिया जाता है। ताकि मानसिक शांति प्राप्त हो सके। भूत और भविष्यत काल की व्यर्थता से निकलकर मनुष्य वर्तमान काल की अनंतता में जीने लगता है। जहाँ वह अनेक चिंताओं से मुक्त होकर अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखता है। लेखक ने इसीलिए जापान की इस 'टी सेरेमनी' को महत्त्व दिया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 5.

'टी सेरेमनी' किसे कहा जाता है? इसमें होने वाले अनुभवों पर टिप्पणी कीजिए।

Answer:

जापानी लोग 'टी सेरेमनी' को चा-नो-यू कहते हैं। 'टी सेरेमनी' का प्रबंध छह मंज़िला इमारत के सबसे ऊपर बनाई गई पर्णकुटी में था। जिसकी छत दफ़्ती की दीवारों वाली थी। वह चटाई की ज़मीन वाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर एक बेढब-सा मिट्टी का बर्तन था। उसमें पानी भरा हुआ था, ताकि जो भी व्यक्ति इसमें प्रवेश करे वह हाथ-पाँव धोकर तौलिए से पोंछकर अंदर जाए। वहाँ बैठा मेज़बान उन्हें देखकर खड़ा हो गया। कमर झुकाकर उसने प्रणाम किया और स्वागत किया। बैठने की जगह दिखाकर उसने अँगीठी सुलगाई और उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से बरतन लाकर उसने उन्हें तौलिए से साफ़ किया। ये सभी क्रियाएँ इतने गरिमापूर्ण तरीके से की गईं कि ऐसा लगा माना चारों तरफ़ से जयजयवंती के सुर फूट रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था। चाय प्यालों में भरकर उनके सामने रख दी। इस पूरी प्रक्रिया में मुख्य बात थी शांति कायम रखना इसीलिए यहाँ तीन से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता है। प्यालों में दो घूँट से अधिक चाय नहीं होती और इसी चाय को दो-तीन घंटों में पिया जाता है। ताकि मानसिक शांति प्राप्त हो सके। भूत और भविष्यत काल की व्यर्थता से निकलकर मनुष्य वर्तमान काल की अनंतता में जीने लगता है। जहाँ वह अनेक चिंताओं से मुक्त होकर अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखता है। लेखक ने इसीलिए जापान की इस 'टी सेरेमनी' को महत्त्व दिया है।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 6.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं, पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं? खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है।

(क) व्यवहारवादी किन्हें कहा जाता है? वे हमेशा सजग क्यों रहते हैं?

(ख) महत्त्व की बात क्या मानी गई है? टिप्पणी कीजिए।

(ग) आदर्शवादी लोगों ने समाज के लिए क्या किया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) व्यवहारवादी लोग वे होते हैं जो अपने लाभ-हानि के आधार पर ही व्यवहार करना उचित मानते हैं। उनका न कोई सिद्धांत होता है, न ही आदर्श। व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं क्योंकि वे हर बात को लाभ-हानि के तराज़ू में तौलते हैं। जैसे-तैसे उन्नति करना ही उनका एकमात्र लक्ष्य होता है। निःसंदेह इस प्रकार वे अन्य लोगों से आगे निकल भी जाते हैं, परंतु उनकी इस सजगता से समाज को कोई लाभ नहीं होता। वे तो मात्र निजी स्वार्थ के लिए जीते हैं।

(ख) लेखक के अनुसार महत्त्व की बात यह मानी गई है कि हम अपनी उन्नति के साथ-साथ दूसरों का भी ध्यान रखें। हमारे द्वारा ऐसा करने पर ही देश व समाज दोनों का कल्याण होगा।

(ग) आदर्शवादी लोगों ने समाज में शाश्वत मूल्यों की स्थापना की है तथा उनकी रक्षा की है। उन्होंने ही समाज के दूसरे लोगों की उन्नति में योगदान दिया है। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी सहारा देकर ऊपर ले चलने का कार्य केवल आदर्शवादी ही कर पाते हैं। वे निजी स्वार्थ से पूर्व समाज कल्याण, लोक कल्याण की बात सोचते हैं।

Question 7.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए।

(क) गद्यांश में लेखक ने किन बातों में उलझे रहने की बात कही है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए– 'असल में दोनों काल मिथ्या हैं।'

(ग) लेखक ने सत्य किसे कहा है और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लेखक कहते हैं कि मनुष्य अक्सर गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या फिर भविष्य के रंगीन सपनों में खोए रहते हैं।

(ख) 'असल में दोनों काल मिथ्या हैं।' लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि भूतकाल बीत चुका है, उसे पुनः पकड़ा नहीं जा सकता इसलिए मिथ्या है। भविष्य अभी आया ही नहीं अतः मिथ्या है।

(ग) लेखक ने वर्तमान काल/क्षण को ही सत्य कहा है क्योंकि वही हमारे सामने है और जो सामने अनुभूत किया जा रहा है वही सत्य है। वर्तमान में जीने से भूत और भविष्य तो श्रेष्ठ हो ही जाएँगे। जीवन जीना भी सरल हो जाएगा।

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

शुद्ध-सोना और गिन्नी का सोना अलग-अलग कैसे है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

शुद्ध सोना पूरी तरह शुद्ध होता है। वह चौबीस (24) कैरेट का होता है उसमें किसी अन्य धातु की मिलावट नहीं होती। गिन्नी का सोना शुद्ध सोने में ताँबा मिलाने से बनता है। वह बाईस (22) कैरेट सोना होता है। ताँबे की इसी मिलावट के कारण वह शुद्ध सोने की अपेक्षा ज़्यादा चमकता है और मज़बूत भी अधिक होता है। औरतें अक्सर इसी सोने के गहने बनवाती हैं।

Question 9.

'टी-सेरेमनी' किसे कहा जाता है? 'झेन की देन' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

जापानी लोग 'टी सेरेमनी' को चा-नो-यू कहते हैं। 'टी सेरेमनी' का प्रबंध छह मंज़िला इमारत के सबसे ऊपर बनाई गई पर्णकुटी में था। जिसकी छत दफ़्ती की दीवारों वाली थी। वह चटाई की ज़मीन वाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर एक बेढब-सा मिट्टी का बर्तन था। उसमें पानी भरा हुआ था, ताकि जो भी व्यक्ति इसमें प्रवेश करे वह हाथ-पाँव धोकर तौलिए से पोंछकर अंदर जाए। वहाँ बैठा मेज़बान उन्हें देखकर खड़ा हो गया। कमर झुकाकर उसने प्रणाम किया और स्वागत किया। बैठने की जगह दिखाकर उसने अँगीठी सुलगाई और उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से बरतन लाकर उसने उन्हें तौलिए से साफ़ किया। ये सभी क्रियाएँ इतने गरिमापूर्ण तरीके से की गईं कि ऐसा लगा माना चारों तरफ़ से जयजयवंती के सुर फूट रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था। चाय प्यालों में भरकर उनके सामने रख दी। इस पूरी प्रक्रिया में मुख्य बात थी शांति कायम रखना इसीलिए यहाँ तीन से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता है। प्यालों में दो घूँट से अधिक चाय नहीं होती और इसी चाय को दो-तीन घंटों में पिया जाता है। ताकि मानसिक शांति प्राप्त हो सके। भूत और भविष्यत काल की व्यर्थता से निकलकर मनुष्य वर्तमान काल की अनंतता में जीने लगता है। जहाँ वह अनेक चिंताओं से मुक्त होकर अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखता है। लेखक ने इसीलिए जापान की इस 'टी सेरेमनी' को महत्त्व दिया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 10.

'शाश्वत मूल्य से आप क्या समझते हैं?' 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर बताइए कि वर्तमान समय में इन मूल्यों की क्या प्रासंगिकता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'शाश्वत मूल्य' वे होते हैं जिनपर युग, स्थान तथा काल का कोई प्रभाव न पड़े जो पौराणिक समय से चले आ रहे हों, वर्तमान में भी जो हमारे समाज और व्यक्तित्व में रच-बस गए हों तथा भविष्य में भी जो हमारा दिशा-निर्देशन करने में सहायक हों। सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, देशप्रेम, मीठी वाणी, एकता, भाई-चारा जैसे मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। वर्तमान समय में भी इन मूल्यों की प्रासंगिकता बनी हुई है। इन मूल्यों में गिरावट के कारण ही समाज का नैतिक पतन हुआ है। जब समाज इन मूल्यों में आस्था जगाएगा तब समाज को आदर्श स्थिति प्राप्त हो पाएगी। आज भी इन मूल्यों की समाज में आवश्यकता है। ये मूल्य समाज का उत्थान करने में सहायक हैं। आज व्यावहारिकता का जो स्तर है उसमें आदर्शों का पालन नितांत आवश्यक है। 'कथनी और करनी' के अंतर ने समाज को आदर्श से हटाकर स्वार्थ और लालच की ओर धकेल दिया है। ऐसे में सत्य, अहिंसा एवं परोपकार जैसे जीवन मूल्य मनुष्य के व्यवहार को आदर्श स्थिति की ओर ले जा सकता है। सत्य, अहिंसा और त्याग के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परोपकार, त्याग, एकता, भाईचारा तथा देशप्रेम की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। ये शाश्वत मूल्य युगों-युगों तक कायम रहेंगे।

Question 11.

"हमें सत्य में जीना चाहिए, सत्य केवल वर्तमान है।" 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' के इस कथन को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

Answer:

लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, हमें उसी में जीना चाहिए क्योंकि केवल सत्य ही शाश्वत है। वर्तमान स्वयं ही सत्य है। हम अक्सर या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपनों में खोए रहते हैं। यदि हम भूतकाल के लिए पछताते रहेंगे या भविष्य की योजनाएँ ही बनाते रहेंगे, तो वर्तमान को भी सही प्रकार से नहीं जी सकेंगे। भूतकाल के सुख-दुख में उलझा रहना हमें तनाव ग्रस्त करता है, जबकि भविष्य के रंगीन सपनों में ही खोए रहना हमें अकर्मण्य (आलसी) बना देता है। जो अभी तक आया ही नहीं उस पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। जो बीत गया वह सत्य नहीं हो सकता। श्रेष्ठ यही है कि हम भूतकाल से शिक्षा लेकर भविष्य की योजनाओं, को वर्तमान में ही कार्यान्वित करें। 'कर्मण्यवाधिकारस्ते' कहकर स्वयं भगवान कृष्ण ने भी मानव को वर्तमान में ही जीने का संदेश दिया है। 'गीता' का सार तत्व यही है कि कर्मठ मनुष्य ही तनावमुक्त रहकर एक स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन जी सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 12.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं? खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्त्व की बात है।

(क) व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग क्यों रहते हैं?

(ख) महत्त्व की बात क्या है और क्यों?

(ग) व्यवहारवादी और आदर्शवादी लोगों में क्या अंतर है?

Answer:

(क) व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। वे हर बात को लाभ-हानि के तराज़ू में तौलते हैं। इस प्रकार वे अन्य लोगों से आगे निकल जाते हैं, परंतु उनकी इस सजगता से समाज को कोई लाभ नहीं होता क्योंकि वे सदैव अपने बारे में ही सोचते रहते हैं।

(ख) लेखक के अनुसार महत्त्व की बात यह है कि हम अपनी उन्नति के साथ-साथ दूसरों का भी ध्यान रखें। हमारे ऐसा करने से ही देश व समाज दोनों का कल्याण होगा।

(ग) व्यवहारवादी वे लोग होते हैं जो अपने लाभ-हानि के आधार पर ही व्यवहार करना उचित मानते हैं। वे न कोई सिद्धांत मानते हैं, न आदर्श। ऐसे लोग जैसे-तैसे उन्नति करने को ही महत्त्व देते हैं। जबकि आदर्शवादी लोग स्वयं भी ऊपर उठते हैं तथा औरों को भी ऊपर उठाते हैं। ऐसे लोग ही समाज को शाश्वत मूल्य दे जाते हैं।

Question 13.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं! ख़ूब ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है।

(क) व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहकर क्या करते हैं?

(ख) महत्त्व की बात किसे माना गया है और क्यों?

(ग) आदर्शवादी लोगों की समाज को क्या देन है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। वे हर बात को लाभ-हानि के तराज़ू में तौलते हैं। इस प्रकार वे अन्य लोगों से आगे निकल जाते हैं, परंतु उनकी इस सजगता से समाज को कोई लाभ नहीं होता क्योंकि वे सदैव अपने बारे में ही सोचते रहते हैं।

(ख) लेखक के अनुसार महत्त्व की बात यह है कि हम अपनी उन्नति के साथ-साथ दूसरों का भी ध्यान रखें। हमारे ऐसा करने से ही देश व समाज दोनों का कल्याण होगा।

(ग) व्यवहारवादी वे लोग होते हैं जो अपने लाभ-हानि के आधार पर ही व्यवहार करना उचित मानते हैं। वे न कोई सिद्धांत मानते हैं, न आदर्श। ऐसे लोग जैसे-तैसे उन्नति करने को ही महत्त्व देते हैं। जबकि आदर्शवादी लोग स्वयं भी ऊपर उठते हैं तथा औरों को भी ऊपर उठाते हैं। ऐसे लोग ही समाज को शाश्वत मूल्य दे जाते हैं।

(क) व्यवहारवादी लोग वे होते हैं जो अपने लाभ-हानि के आधार पर ही व्यवहार करना उचित मानते हैं। उनका न कोई सिद्धांत होता है, न ही आदर्श। व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं क्योंकि वे हर बात को लाभ-हानि के तराज़ू में तौलते हैं। जैसे-तैसे उन्नति करना ही उनका एकमात्र लक्ष्य होता है। निःसंदेह इस प्रकार वे अन्य लोगों से आगे निकल भी जाते हैं, परंतु उनकी इस सजगता से समाज को कोई लाभ नहीं होता। वे तो मात्र निजी स्वार्थ के लिए जीते हैं।

(ख) लेखक के अनुसार महत्त्व की बात यह मानी गई है कि हम अपनी उन्नति के साथ-साथ दूसरों का भी ध्यान रखें। हमारे द्वारा ऐसा करने पर ही देश व समाज दोनों का कल्याण होगा।

(ग) आदर्शवादी लोगों ने समाज में शाश्वत मूल्यों की स्थापना की है तथा उनकी रक्षा की है। उन्होंने ही समाज के दूसरे लोगों की उन्नति में योगदान दिया है। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी सहारा देकर ऊपर ले चलने का कार्य केवल आदर्शवादी ही कर पाते हैं। वे निजी स्वार्थ से पूर्व समाज कल्याण, लोक कल्याण की बात सोचते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 14.

'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर लिखिए कि कौन से मूल्य शाश्वत हैं? इन मूल्यों की जीवन में उपयोगिता बताइए।

Answer:

'शाश्वत मूल्य' वे होते हैं जिनपर युग, स्थान तथा काल का कोई प्रभाव न पड़े जो पौराणिक समय से चले आ रहे हों, वर्तमान में भी जो हमारे समाज और व्यक्तित्व में रच-बस गए हों तथा भविष्य में भी जो हमारा दिशा-निर्देशन करने में सहायक हों। सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, देशप्रेम, मीठी वाणी, एकता, भाई-चारा जैसे मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। वर्तमान समय में भी इन मूल्यों की प्रासंगिकता बनी हुई है। इन मूल्यों में गिरावट के कारण ही समाज का नैतिक पतन हुआ है। जब समाज इन मूल्यों में आस्था जगाएगा तब समाज को आदर्श स्थिति प्राप्त हो पाएगी। आज भी इन मूल्यों की समाज में आवश्यकता है। ये मूल्य समाज का उत्थान करने में सहायक हैं। आज व्यावहारिकता का जो स्तर है उसमें आदर्शों का पालन नितांत आवश्यक है। 'कथनी और करनी' के अंतर ने समाज को आदर्श से हटाकर स्वार्थ और लालच की ओर धकेल दिया है। ऐसे में सत्य, अहिंसा एवं परोपकार जैसे जीवन मूल्य मनुष्य के व्यवहार को आदर्श स्थिति की ओर ले जा सकता है। सत्य, अहिंसा और त्याग के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परोपकार, त्याग, एकता, भाईचारा तथा देशप्रेम की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। ये शाश्वत मूल्य युगों-युगों तक कायम रहेंगे।

Question 15.

जापान में मानसिक रोग के क्या कारण हैं? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं? 'झेन की देन' पाठ के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

Answer:

लेखक के मित्र ने जापान में बढ़ते मानसिक रोग का मुख्य कारण बताया है– जापानियों द्वारा अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करना। इस प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने अपनी दैनिक कार्यों (दिनचर्या) की गति बढ़ा दी है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह काम नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया जाए, तो उनका मानसिक संतुलन बिगड़ना अवश्यंभावी है। मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें शांत एवं तनाव मुक्त रखना आवश्यक है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 16.

'गांधी के नेतृत्व में अद्‌भुत क्षमता थी'– कथन की पुष्टि 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर उदाहरण सहित कीजिए।

Answer:

'गांधी जी के नेतृत्व में अद्‌भुत क्षमता थी'। सभी लोगों को साथ लेकर चलते थे। एक ओर यदि वे आदर्शों का महत्व समझते थे, तो दूसरी ओर व्यावहारिकता की कीमत भी जानते थे। वे कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों पर चलाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन, असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च और भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया तथा सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्य समाज को दिए। भारतीयों ने गांधी जी के नेतृत्व से आश्वस्त होकर उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। सभी उनका नेतृत्व स्वीकार करके गर्व का अनुभव करते थे। उनकी पहली प्राथमिकता लोक कल्याण थी। वे अपने स्वार्थों को किसी कार्य में बाधा नहीं बनने देते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सारी जनता उनके पीछे हो जाती थी। अपने नेतृत्व की इसी अद्‌भुत क्षमता के कारण गांधी जी देश को आज़ाद करवाने में सफल हुए थे।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 17.

निम्नलिखित गद्‌यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों– जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) व्यवहारवादी लोगों के सजग रहने के क्या-क्या कारण हैं?

(ख) आदर्शवादी लोगों की समाज को क्या-क्या देन है?

(ग) समाज को पतन की ओर ले जाने वाले कौन लोग हैं? उनका मुख्य उद्‌देश्य क्या रहता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। वे हर बात को लाभ-हानि के तराज़ू में तौलते हैं। इस प्रकार वे अन्य लोगों से आगे निकल जाते हैं, परंतु उसकी इस सजगता से समाज को कोई लाभ नहीं होता क्योंकि वे सदैव अपने बारे में ही सोचते रहते हैं।

(ख) आदर्शवादी लोगों ने समाज में शाश्वत मूल्यों की स्थापना की है तथा उनकी रक्षा की है। उन्होंने ही समाज के दूसरे लोगों की उन्नति में योगदान दिया है। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी सहारा देकर ऊपर ले चलने का काम केवल आदर्शवादी ही कर पाते हैं। वे निजी स्वार्थ से पूर्व समाज कल्याण की बात सोचते हैं।

(ग) समाज को पतन की ओर ले जाने वाले लोग व्यवहारवादी लोग हैं। इनका मुख्य उद्देश्य होता है जैसे-तैसे उन्नति करना इसीलिए ये अपने लाभ-हानि के आधार पर ही व्यवहार करना उचित मानते हैं। ये न कोई सिद्धांत मानते हैं, न कोई आदर्श।

Question 18.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग़ से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।

(क) 'खट्टी-मीठी' यादों और 'रंगीन सपनों' का तात्पर्य समझाइए।

(ख) हमारे समस्त प्रयास वर्तमान के लिए क्यों होने चाहिए?

(ग) चाय पीने के बाद लेखक को किन परिवर्तनों का अनुभव हुआ?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) 'खट्टी-मीठी यादों' से लेखक का तात्पर्य है– भूतकाल में घटी वे अच्छी व बुरी घटनाएँ जो मनुष्य को सुख-दुख में उलझाए रखती हैं। 'रंगीन सपनों' से लेखक भविष्य के उन सुनहरे सपनों की ओर संकेत कर रहा है। जिन्हें भविष्य में पूरा करने की उधेड़-बुन में मनुष्य लगा रहता है।

(ख) हमारे समस्त प्रयास वर्तमान के लिए ही होने चाहिए क्योंकि वर्तमान काल ही सत्य है। भूतकाल जा चुका है, उसकी खट्टी-मीठी बातों में उलझकर वर्तमान को व्यर्थ गँवाना नासमझी है। जबकि भविष्य काल के रंगीन सपने देखते रहने से श्रेष्ठ है अपने वर्तमान का इतना सदुपयोग करना कि भावी जीवन की समस्त गुत्थियाँ स्वयं सुलझ जाएँ।

(ग) चाय पीने के बाद लेखक ने अनुभव किया कि उनके दिमाग़ की रफ़्तार धीमी पड़ती चली गई। थोड़ी देर में बिलकुल बंद भी हो गई। उसे लगा कि वह मानो अनंत काल में जी रहा हो। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। उसके दिमाग़ से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। वह केवल वर्तमान में था और वह अनंत काल जितना विस्तृत मालूम होता था।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 19.

'गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।' 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

Answer:

'गांधी जी के नेतृत्व में अद्भुत क्षमता थी'। सभी लोगों को साथ लेकर चलते थे। एक ओर यदि वे आदर्शों का महत्व समझते थे, तो दूसरी ओर व्यावहारिकता की कीमत भी जानते थे। वे कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों पर चलाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन, असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च और भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया तथा सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्य समाज को दिए। भारतीयों ने गांधी जी के नेतृत्व से आश्वस्त होकर उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। सभी उनका नेतृत्व स्वीकार करके गर्व का अनुभव करते थे। उनकी पहली प्राथमिकता लोक कल्याण थी। वे अपने स्वार्थों को किसी कार्य में बाधा नहीं बनने देते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सारी जनता उनके पीछे हो जाती थी। अपने नेतृत्व की इसी अद्भुत क्षमता के कारण गांधी जी देश को आज़ाद करवाने में सफल हुए थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 20.

जापान में तनावमुक्त होने के लिए कौन-सी परंपरा है? इस संबंध में 'झेन की देन' पाठ के लेखक के अनुभूत तथ्य का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

Answer:

जापान में तनावमुक्त होने के लिए चा-नो-यू (दिमाग़ को तनावमुक्त करने के लिए बनाई गई चाय पीने की एक विशेष विधि) की परंपरा है, जो कि झेन परंपरा की देन है। इस संबंध में 'झेन की देन' पाठ के लेखक रवींद्र केलेकर को विशिष्ट अनुभव हुए थे। उन्हें इस विधि से चाय पीते हुए उस स्थान पर सन्नाटा भी महसूस होने लगा था, उनके दिमाग़ की रफ़्तार एकदम धीमी पड़ गई थी। उन्हें उस क्षण ऐसा महसूस हो रहा था कि वे अनंतकाल में जी रहे हों तथा उन्हें यह भी अनुभव हो गया था कि भूत और भविष्य दोनों ही काल मिथ्या हैं, सत्य तो केवल वर्तमान है, अतः व्यक्ति को उसी में जीवन बिताना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 21.

'गिन्नी का सोना' पाठ में लेखक के अनुसार 'सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए'। लेखक ने ऐसा क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'गिन्नी का सोना' में लेखक के अनुसार 'सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए।' लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि भूतकाल यानी बीता हुआ कल लाख प्रयासों के बाद भी वापस नहीं लाया जा सकता और उसकी खट्टी-मीठी यादें व्यक्ति को कुंठित कर देती हैं, जिसका प्रभाव उसके वर्तमान को प्रभावित करता है, साथ ही भविष्य के सपने देखना और उसी में खोए रहना भी उचित नहीं है क्योंकि भविष्य कल कैसा आकार लेगा यह कोई नहीं जानता है। इस आधार पर ये दोनों ही काल मिथ्या हैं, जबकि वर्तमान ही सत्य है और इसमें जीने से व्यक्ति का जीवन आनंदित रहता है और उसका भविष्य भी उज्ज्वल बन जाता है। अतः जीवन का सच्चा आनंद लेने के लिए व्यक्ति को वर्तमान को सत्य मानते हुए उसी में जीने का प्रयत्न करना चाहिए।

Question 22.

'गांधीजी के नेतृत्व में अद्भुत क्षमता थी।' उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'गांधी जी के नेतृत्व में अद्‌भुत क्षमता थी'। सभी लोगों को साथ लेकर चलते थे। एक ओर यदि वे आदर्शों का महत्व समझते थे, तो दूसरी ओर व्यावहारिकता की कीमत भी जानते थे। वे कभी भी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों पर चलाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन, असहयोग आंदोलन, दांडी मार्च और भारत छोड़ो जैसे आंदोलनों का नेतृत्व किया तथा सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्य समाज को दिए। भारतीयों ने गांधी जी के नेतृत्व से आश्वस्त होकर उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। सभी उनका नेतृत्व स्वीकार करके गर्व का अनुभव करते थे। उनकी पहली प्राथमिकता लोक कल्याण थी। वे अपने स्वार्थों को किसी कार्य में बाधा नहीं बनने देते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सारी जनता उनके पीछे हो जाती थी। अपने नेतृत्व की इसी अद्‌भुत क्षमता के कारण गांधी जी देश को आज़ाद करवाने में सफल हुए थे।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 23.

निम्नलिखित गद्‌यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

चंद लोग कहते हैं गांधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसीलिए तो वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता। हाँ, पर गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

(क) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' का क्या तात्पर्य है?

(ख) गांधीजी व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर पर कैसे चढ़ाते थे?

(ग) गांधीजी के पीछे देश क्यों गया?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) ऐसा व्यक्ति, जो समाज के संचालन हेतु आदर्श व व्यावहारिकता का सही संयोग से अपने सिद्धांतों तथा अपनी नीतियों का निर्माण करे, उसे 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहते हैं। इस अर्थ में गांधी जी सच्चे अर्थ में प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट थे क्योंकि वे व्यावहारिकता में आदर्शों को मिलाकर ऐसी नीतियों का निर्माण करते थे, जिनमें पूरी तरह से सामाजिक हित निहित होता था।

(ख) गांधी व्यावहारिकता को आदर्श के स्तर पर चढ़ाते समय यह ध्यान रखते थे कि किसकी मात्रा कितनी हो। इसी कारण वे व्यावहारिकता को सामने रखकर उसमें आदर्शों का समावेश करते थे और इस मात्रा में आदर्श मिला देते थे कि आदर्श ही सामने आते थे और व्यावहारिकता कहीं खो जाती थी। व्यावहारिकता में आदर्शों की इस नीति में समाज के लिए उपयोगी परमार्थ, सहयोग, परस्पर प्रेम, दयालुता एवं 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' की भावना दिखाई देती थी।

(ग) देश का बच्चा-बच्चा यह बात अच्छी तरह जानता था कि गांधी जी की नीतियों में आदर्शों की मात्रा अधिक है। इसी कारण उनकी नीतियों, उनके सिद्धांतों में देश को अपना हित दिखाई देता था। यही कारण है कि अपना हित देखते हुए देश गांधी जी के पीछे गया।

Question 24.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों– जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) आदर्शवादी लोग क्या करते हैं?

(ख) आदर्शवादी लोगों की समाज को क्या देन है?

(ग) व्यवहारवादियों ने समाज के लिए क्या किया?

Answer:

(क) आदर्शवादी लोग परमार्थ की भावना से भरे होते हैं। अतः वे अपने साथ दूसरों को लेकर ही आगे बढ़ते हैं अर्थात वे केवल अपनी उन्नति की बात नहीं सोचते, बल्कि संपूर्ण समाज की उन्नति की अभिलाषा करते हैं।

(ख) आदर्शवादी लोग समाज में शाश्वत मूल्यों, जैसे-दया, प्रेम, करुणा, परमार्थ, ईमानदारी की समाज में स्थापना करते हैं और इन्हीं शाश्वत मूल्यों से समाज का अस्तित्व बना रहता है।

(ग) व्यवहारवादी लोग स्वार्थी होते हैं। वे हर कार्य में अपना हित देखते हैं। समाज के हित से उनका कोई लेना-देना नहीं होता है। अपनी इस दूषित व संकुचित सोच से व्यवहारवादियों ने सदा से समाज को गिराने का ही कार्य किया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 25.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग़ की रफ़्तार हमेशा तेज़ ही रहती है। उसे 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हज़ार गुना अधिक रफ़्तार से दौड़ने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है जब दिमाग़ का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है।... यही कारण है जिससे मानसिक रोग वहाँ बढ़ गए हैं।

(क) जापान के लोग अधिकतर किस रोग से ग्रस्त रहते हैं? और क्यों?

(ख) दिमाग़ का तनाव बढ़ने पर जापानी लोग क्या करते हैं?

(ग) 'झेन परंपरा' की देन क्या है?

Answer:

(क) जापान के लोग अक्सर मानसिक रोग से ग्रस्त रहते हैं। उनके मानसिक रोग से पीड़ित होने का कारण कार्य की अधिकता तथा अमेरिका से होड़ है। इसी होड़ के कारण वे एक महीने का कार्य एक दिन में पूरा करना चाहते हैं। परिणामतः वे मानसिक रोगों की चपेट में आ जाते हैं।

(ख) दिमाग़ का तनाव बढ़ने पर जापानी लोग चाय पीने की एक विधि अपनाते हैं, जिसे चा-नो-यू कहा जाता है। विशेष स्थान पर जहाँ व्यक्ति सन्नाटा भी महसूस कर सकता है, ये लोग चाय पीते हैं। इस विधि में कोई किसी से बात नहीं करता, केवल उस स्थान पर मिलने वाली शांति को दिल और दिमाग़ में सिमेटने का प्रयास करता है।

(ग) चा-नो-यू (दिमाग़ को आराम देने के लिए बनाई गई चाय पीने की एक विशेष विधि) झेन परंपरा की देन है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 26.

आदर्श और व्यावहारिकता में क्या अंतर है? शुद्ध आदर्श और व्यावहारिकता की तुलना लेखक ने सोने और ताँबे से क्यों की है? 'गिन्नी का सोना' के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

आदर्श शाश्वत मूल्यों से परिपूर्ण व्यवहार है, इसमें परमार्थ की भावना निहित होती है, जबकि स्वहित को ध्यान में रखकर आचरण करना व्यावहारिकता है, जिसका आदर्शों से कोई लेना-देना नहीं होता। इसमें स्वार्थ की प्रधानता होती है। आदर्श समाज के लिए उपयोगी होते हैं, इनका समाज के उत्थान में विशेष योगदान होता है, इसके विपरीत व्यावहारिकता में केवल अपना विकास व अपने हित की भावना दिखाई देती है। पाठ में शुद्ध आदर्श की तुलना शुद्ध सोने से की गई है क्योंकि जिस प्रकार शुद्ध सोना गिन्नी के सोने की अपेक्षा अधिक मूल्यवान होता है, उसी प्रकार शुद्ध आदर्श भी व्यावहारिकता की अधिकता वाले कथित आदर्शों से अधिक उपयोगी होते हैं और चरित्र को विभूषित करते हैं, जबकि ताँबे में ये खूबियाँ नहीं होतीं और न ही वह सोने की तरह मूल्यवान होता है। इसी कारण ताँबे की तुलना व्यावहारिकता से की गई है।

Question 27.

'झेन की देन' के आधार पर लिखिए कि लेखक ने जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगे होने की बात क्यों कही है?

Answer:

लेखक ने जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगाने की बात इसलिए कही है क्योंकि वे तीव्र गति से प्रगति करना चाहते हैं। महीने के काम को एक दिन में पूरा करना चाहते हैं। अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा के चलते वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। कार्य की अधिकता के कारण ऐसा लगता है कि अब वहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है, कोई बोलता नहीं, बकता है। जब वे अकेले पड़ जाते हैं, तो वे स्वयं से ही बड़बड़ाने लगते हैं। उन्होंने स्वयं को विकसित देशों की पहली पंक्ति में लाने की ठान ली है।

Question 28.

'झेन की देन' पाठ के आधार पर लिखिए कि चाजीन ने गरिमापूर्ण ढंग से क्या-क्या कार्य किए, जिनसे लेखक प्रभावित हुआ।

Answer:

एक छह मंज़िली इमारत की छत पर एक पर्णकुटी बनी हुई थी। अंदर एक चाजीन बैठा हुआ'था। सर्वप्रथम उसने लेखक और उसके मित्र का स्वागत करते हुए कमर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया। चाजीन ने अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। पास के कमरे से बाकी बरतन ले आया और उन्हें धोकर पोंछने लगा। ये सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण थीं, मानो वहाँ जयजयवंती के स्वर गूँज रहे हों। वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत था और लेखक इससे अत्यंत प्रभावित हुआ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 29.

'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

Answer:

'टी-सेरेमनी' में केवल तीन लोगों को ही प्रवेश दिया जाता था। वहाँ एक चाज़ीन होता है और दो लोग चाय पीने वाले होते हैं। वहाँ इतनी शांति होती है कि चाय के लिए उबलने पानी की आवाज भी स्पष्ट सुनाई पड़ती है। चाय पीते समय तो वहाँ केवल सन्नाटे की गूँज सुनाई पड़ती है। इस शांति का उद्देश्य यही होता है कि दिमाग शांत हो, उसकी रफ़्तार धीमी हो, मन को शांति मिले।

Question 30.

जापान में चाय पिलाने की विधि को क्या कहते हैं? उसकी क्या विशेषता है? सविस्तार समझाइए।

Answer:

जापान में चाय पिलाने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि वहाँ असीम शांति होती है। वहाँ इतनी शांति होती है कि वहाँ सन्नाटा भी गूँजता है। वहाँ की पवित्रता और शांति की तुलना जयजयवंती से की है। इसमें दिमाग़ की रफ़्तार बिलकुल धीमी पड़ जाती है और दिल दिमाग को बहुत सुकून मिलता है। लोग भूत और भविष्य काल को भूलकर वर्तमान में जीने लगते हैं। चाय पिलाने की इस विधि के द्वारा मानसिक बीमारियों की संख्या पर रोक लगी है। जापान के लोग एवं अन्य इस विधि का खूब आनंद उठाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 31.

'गिन्नी का सोना' प्रसंग में "शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना" गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

पाठ में ताँबा व्यावहारिकता के लिए तथा सोना आदर्शों के लिए प्रयुक्त हुआ है। गांधी जी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में ताँबें में सोने वाली बात झलकती है। वे समाज की नब्ज़ को पहचानते थे और समाज में आदर्शों की स्थापना करना चाहते थे। इसी कारण वे अपनी नीतियों में व्यावहारिकता में आदर्शों का समावेश करते थे और इस मात्रा में आदर्श मिला देते थे कि आदर्श ही सामने आते थे और व्यावहारिकता कहीं खो जाती थी। व्यावहारिकता में आदर्शों की इस नीति से समाज में परमार्थ, सहयोग, परस्पर प्रेम, दयालुता एवं सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय की भावना का विकास हुआ और गांधी जी की यह विधि सफल हो गई।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 32.

'झेन की देन' पाठ में लेखक ने जापान में मानसिक रोग बढ़ने के क्या कारण बताए हैं? उससे राहत पाने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए?

Answer:

जापान में मानसिक रोग बढ़ने का कारण है—प्रतिस्पर्धा। जापान अमेरिका से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। जापान के लोग एक महीने का काम एक दिन में पूरा करना चाहते हैं। इस कारण उनकी दिनचर्या देखकर ऐसा लगता है कि वे चलते नहीं दौड़ते हैं, वे बोलते नहीं बकते हैं। उनके जीवन में रफ़्तार है और उसी रफ़्तार को तेज़ और तेज़ करने के लिए मानो जापानियों ने अपनी रफ़्तार को बनाए रखने के लिए दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगा लिया है। इसी कारण जापान में मानसिक रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। जापान के लगभग अस्सी प्रतिशत लोग मनोविकार से ग्रसित हो गए हैं। यह समस्या अत्यंत गंभीर समस्या है। इस समस्या का समाधान है— शांति। लोगों को मानसिक शांति चाहिए तभी इस मानसिक विकार से संबंधित रोगों का समाधान होगा। जापानी मानसिक शांति पाने के लिए ही 'झेन से जुड़ी परंपरा' चा-नो-यू जैसी विधियों का प्रयोग कर रहे हैं।

Question 33.

"हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं, तब अपने-आप से लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।"— पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ हर कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं, तब अपने-आप से लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।' प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने जापानियों की जीवनशैली एवं जापान के लोगों के जीवन का वर्णन किया है। जापान अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने लगा है, जिसके कारण उसका दिन का चैन खत्म हो गया है और रात की नींद उड़ गई है। वे अमेरिका से आगे बढ़ने की होड़ में एक महीने का काम एक दिन में ही निपटाना चाहते हैं। मस्तिष्क में स्पीड का इंजन लगाकर वे केवल काम करते हैं और इसी कारण चिंताग्रस्त, तनावग्रस्त रहने लगे हैं। उनके जीवन की गति इतनी तीव्र हो गई है कि उनकी मानसिक स्थिति डाँवाडोल होने लगती है। लेखक कहते हैं कि असामान्य जीवनशैली के कारण जापान में मानसिक बीमारियाँ सबसे अधिक होती हैं। यह सच है कि जब उनके दिमाग़ की रफ़्तार बहुत तेज़ हो जाती है, तो उनके दिमाग़ में जो स्पीड का इंजन लगा होता है वह टूट जाता है और वे मानसिक रूप से विकृत हो जाते हैं। हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं कि दिमाग़ को मानसिक शांति देते हुए ही हम प्रगति कर सकते हैं। प्रगति मानव की सुविधाओं के लिए होती है इसलिए वैसी प्रगति किसी काम की नहीं जिसे पाने के लिए मनुष्य मानसिक संतुलन ही खो दे। निष्कर्षता तथा हमें अपने दिमाग़ की रफ़्तार को एक सीमा में ही रखना चाहिए।

Question 34.

'ज़ेन की देन' प्रसंग में लेखक के मित्र ने जापान में मानसिक रोग अधिक होने के क्या-क्या कारण बताए हैं? क्या आप उन कारणों से सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

Answer:

लेखक के मित्र ने जापान में बढ़ते मानसिक रोग का मुख्य कारण बताया है— जापानियों द्वारा अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करना। इस प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने अपनी दैनिक कार्यों (दिनचर्या) की गति बढ़ा दी है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह काम नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया जाए, तो उनका मानसिक संतुलन बिगड़ना अवश्यंभावी है। मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें शांत एवं तनाव मुक्त रखना आवश्यक है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 35.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हम लोग उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहकर उनका बखान करते हैं। पर बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं।

(क) शुद्ध आदर्श की तुलना शुद्ध सोने से क्यों की गई है?

(ख) लेखक ने व्यावहारिकता की तुलना किस सोने से की है? उसकी क्या विशेषता है?

(ग) ताँबा कब प्रमुख हो जाता है?

Answer:

(क) शुद्ध आदर्श की तुलना शुद्ध सोने से की गई है क्योंकि जिस प्रकार सोना मूल्यवान होता है उसी प्रकार शुद्ध आदर्शों का भी जीवन में महत्त्व होता है।

(ख) लेखक ने व्यावहारिकता की तुलना गिन्नी के सोने से की है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें ताँबा मिला होने कारण यह ज़्यादा मज़बूत, और टिकाऊ होता है।

(ग) ताँबा जब सोने में मिला दिया जाता है तब सोने की चमक और उसकी मज़बूती बढ़ जाती है। इस प्रकार से ताँबे के महत्त्व का पता चलता है।

Question 36.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों-जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) 'वे' सर्वनाम का प्रयोग किनके लिए हुआ है?

(ख) व्यवहारवादी लोगों के सफल होने के क्या कारण हैं?

(ग) आदर्शवादी लोगों ने हमेशा कैसा काम किए हैं? समाज को उनकी क्या देन है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) 'वे' सर्वनाम का प्रयोग व्यवहारवादी लोगों के लिए हुआ है।

(ख) व्यवहारवादी लोग केवल लाभ और हानि के बारे में सोचकर ही कोई कार्य करते हैं। उनकी सोच केवल अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए ही होती है। इसीलिए वे केवल अपने लाभ हेतु कार्य करते हैं और सफल होते हैं।

(ग) आदर्शवादी लोगों ने हमेशा परमार्थ के काम किए हैं। उन्होंने अपने से पहले दूसरों के बारे में सोचा है। वे सदा 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' की भावना से ओतप्रोत रहे हैं। उनका लक्ष्य संपूर्ण समाज की भलाई रहा है। समाज के लिए दया, त्याग, करुणा, बलिदान, परोपकार, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा जैसे शाश्वत मूल्य आदर्शवादी लोगों की ही देन हैं।

Question 37.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।

(क) प्रायः हम किन बातों में उलझे रहते हैं?

(ख) हमें किस काल में जीना चाहिए और क्यों?

(ग) लेखक ने अनंतकाल जैसा विस्तृत किसे कहा है और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) प्रायः हम अपने अतीत की सुखद व दुखद स्मृतियों में ही उलझे रहते हैं या फिर भविष्य को लेकर तरह-तरह के सपने बुनते रहते हैं।

(ख) हमें भूत व भविष्य दोनों मिथ्या कालों में न जीकर वर्तमान में ही जीना चाहिए क्योंकि सत्य केवल वर्तमान है, बाकी दोनों कालों में विचरण करना बुद्धिमानी नहीं है। भूत बीत चुका है, जो लाख प्रयास करने के बावजूद वापस नहीं लौट सकता और भविष्य कैसा आकार लेगा, इसके बारे में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। इसलिए यदि हम वर्तमान में निष्ठापूर्वक जिएँगे, तो भूतकाल की सुखद व दुखद स्मृतियों से व्यथित भी नहीं होंगे और साथ ही तनावमुक्त रहने से हमारा भविष्य भी सँवरे हुए रूप में हमारे सामने आएगा।

(ग) लेखक ने अनंतकाल जितना विस्तृत वर्तमान काल को कहा है क्योंकि यदि मनुष्य भूत व भविष्य जैसे कालों से ध्यान हटा ले और वर्तमान काल में ही जीने का प्रयास करे तो उसे अपने जीवन का हर पल वर्तमान से ही जुड़ा और सँवरा-सँवरा दिखाई देता है। वह भूत व भविष्य दोनों ही कालों को ही मिथ्या मानने लगता है और उसे जीवन में आगे तक वर्तमान ही चलता दिखाई देने लगता है। उसके जीवन में सकारात्मकता आ जाती है तथा नकारात्मकता का कोई स्थान नहीं रहता।

Question 38.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था। उसमें पानी भरा हुआ था। हमने अपने हाथ-पाँव इस पानी से धोए। तौलिए से पोंछे और अंदर गए। अंदर 'चाजीन' बैठा था। हमें देखकर वह खड़ा हुआ। कमर झुकाकर उसने हमें प्रणाम किया। दो-झो (आइए, तशरीफ़ लाइए) कहकर स्वागत किया। बैठने की जगह हमें दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिए से बरतन साफ़ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।

(क) पर्णकुटी के बाहर मिट्टी का बरतन रखने का क्या प्रयोजन था?

(ख) चाजीन ने लेखक का स्वागत कैसे किया?

(ग) चाय बनाए जाने की सारी प्रक्रिया समझाइए।

Answer:

(क) पर्णकुटी के बाहर मिट्टी का बरतन रखने का यह प्रयोजन था कि आने वाला प्रत्येक व्यक्ति पानी से हाथ-मुँह धोकर कुटिया के अंदर प्रवेश करे।

(ख) चाजीन लेखक को देखकर खड़ा हो गया तथा कमर झुकाकर उसने उन्हें प्रणाम किया। दो-झो कहकर स्वागत किया।

(ग) चाजीन ने चाय बनाने की सारी प्रक्रिया बड़े गरिमापूर्ण ढंग से की। उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों। उसने अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया, तौलिए से बरतन साफ़ किए और चाय बनाने की प्रक्रिया पूर्ण की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 39.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यत्काल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग़ से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था। और वह अनन्तकाल जितना विस्तृत था। जीना किसे कहते हैं, उस दिन मालूम हुआ।

(क) लेखक ने भूत और भविष्यत् दोनों कालों को मिथ्या क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) "वर्तमान क्षण की सत्य है"– इससे क्या तात्पर्य है? सोदाहरण समझाइए।

(ग) चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

Answer:

(क) लेखक ने भूत और भविष्य दोनों कालों को मिथ्या कहा है क्योंकि एक चला गया है और दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है।

(ख) वर्तमान काल सबसे महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि भूतकाल वह है जो चला गया है और भविष्यकाल वह है जिसके बारे में हम नहीं जानते। केवल वर्तमान ही वह क्षण है जिसका सदुपयोग कर हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं। इसीलिए वर्तमान को सत्य कहा गया है।

(ग) चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में अप्रत्याशित परिवर्तन महसूस किया। उसके दिमाग़ की रफ़्तार धीरे-धीरे कम पड़ गई, उसे सन्नाटा भी सुनाई देने लगा। उसे महसूस हो गया कि भूत और भविष्य दोनों ही काल मिथ्या हैं, सत्य तो केवल वर्तमान है, अतः मानसिक शांति के लिए व्यक्ति को केवल वर्तमान में ही जीना चाहिए। इस प्रकार इस दो घूँट चाय ने उसे जीवन जीने की कला सिखा दी।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 40.

वर्तमान समय में शाश्वत मूल्यों की क्या उपयोगिता है? 'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर प्रकाश डालिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'शाश्वत मूल्य' वे होते हैं जिनपर युग, स्थान तथा काल का कोई प्रभाव न पड़े जो पौराणिक समय से चले आ रहे हों, वर्तमान में भी जो हमारे समाज और व्यक्तित्व में रच-बस गए हों तथा भविष्य में भी जो हमारा दिशा-निर्देशन करने में सहायक हों। सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, देशप्रेम, मीठी वाणी, एकता, भाई-चारा जैसे मूल्य शाश्वत मूल्य हैं। वर्तमान समय में भी इन मूल्यों की प्रासंगिकता बनी हुई है। इन मूल्यों में गिरावट के कारण ही समाज का नैतिक पतन हुआ है। जब समाज इन मूल्यों में आस्था जगाएगा तब समाज को आदर्श स्थिति प्राप्त हो पाएगी। आज भी इन मूल्यों की समाज में आवश्यकता है। ये मूल्य समाज का उत्थान करने में सहायक हैं। आज व्यावहारिकता का जो स्तर है उसमें आदर्शों का पालन नितांत आवश्यक है। 'कथनी और करनी' के अंतर ने समाज को आदर्श से हटाकर स्वार्थ और लालच की ओर धकेल दिया है। ऐसे में सत्य, अहिंसा एवं परोपकार जैसे जीवन मूल्य मनुष्य के व्यवहार को आदर्श स्थिति की ओर ले जा सकता है। सत्य, अहिंसा और त्याग के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता। शांतिपूर्ण जीवन बिताने के लिए परोपकार, त्याग, एकता, भाईचारा तथा देशप्रेम की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। ये शाश्वत मूल्य युगों-युगों तक कायम रहेंगे।

Question 41.

'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संबंध में ताँबे और सोने का रूपक स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'गिन्नी का सोना' पाठ के आधार पर गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संबंध में ताँबे में सोना मिलाने वाली बात झलकती थी। यहाँ ताँबा व्यावहारिकता तथा सोना आदर्शों का प्रतीक है। अतः स्पष्ट होता है कि गांधीजी अपनी नीतियों या सिद्धांतों में व्यावहारिकता में आदर्शों को मिलाया करते थे और आदर्शों को इस मात्रा में मिला देते थे कि आदर्श प्रमुख तथा व्यावहारिकता गौण हो जाती थी। इसी कारण समाज ने आदर्शों को अपनाने के लिए उनकी नीतियों को स्वीकार किया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 42.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं, पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं? खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है, तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) व्यवहारवादी लोगों की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

(ख) महत्त्व की बात क्या है?

(ग) समाज को आदर्शवादी लोगों की क्या देन है?

Answer:

(क) व्यवहारवादी लोगों की ये विशेषताएँ बताई गई हैं कि ये लोग स्वार्थी होते हैं। अपने लाभ को ध्यान में रखते हुए ही कार्य करते हैं। इन्हें समाज के अन्य लोगों से कोई लेना-देना नहीं होता। ये केवल अपनी उन्नति की बात सोचते हैं, दूसरों की उन्नति इन्हें अच्छी नहीं लगती।

(ख) समाज के लिए महत्त्व की बात यह है कि व्यक्ति न केवल खुद, बल्कि संपूर्ण समाज को साथ लेकर आगे बढ़े अर्थात अपनी भलाई के साथ-साथ दूसरों की भलाई का भी ध्यान रखे।

(ग) आदर्शवादी लोग समाज में शाश्वत जीवन मूल्यों की स्थापना करके समाज को आदर्श आकार देते हैं। वे अपने साथ समाज के अन्य लोगों को भी लेकर आगे बढ़ना चाहते हैं। इस प्रकार दया, त्याग, परोपकार, भाईचारा, ईमानदारी जैसे गुण आदर्शवादी लोगों की देन है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 43.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हम लोग उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहकर उनका बखान करते हैं।

पर बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है। सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।

(क) शुद्ध आदर्श की तुलना किससे की गई है और क्यों?

(ख) आदर्श में व्यावहारिकता मिला देने का क्या आशय है? इसका क्या परिणाम होता है?

(ग) सोने की अपेक्षा ताँबा आगे क्यों आ जाता है?

Answer:

(क) शुद्ध आदर्श की तुलना शुद्ध सोने से की गई है क्योंकि जिस प्रकार शुद्ध सोना गिन्नी के सोने की अपेक्षा अधिक मूल्यवान होता है, उसी प्रकार शुद्ध आदर्श भी व्यावहारिकता की अधिकता वाले कथित आदर्शों से अधिक उपयोगी होते हैं और चरित्र को विभूषित कर देते हैं।

(ख) आदर्श में व्यावहारिकता मिला देने से उसमें शुद्धता नहीं रह जाती और व्यावहारिकता की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती जाने पर स्वार्थ ही आगे आता है और परमार्थ की आदर्श भावना पीछे टूट जाती है।

(ग) ताँबा व्यावहारिकता का प्रतीक है और सोना आदर्शों का। समाज में जो प्रैक्टिकल 'आइडियालिस्ट नीतियों एवं सिद्धांतों में अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए व्यावहारिकता को बढ़ा देते हैं। यदि वे ऐसा न करें तो उन्हें कोई लाभ न हो। उनके इस स्वार्थ के कारण ही सोने की अपेक्षा ताँबा आगे आता है यानी उनकी नीतियों मे व्यावहारिकता ही अधिक होती है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 44.

'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि जापानी लोगों को मानसिक बीमारियाँ अधिक क्यों होती हैं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

जापान में मानसिक रोग बढ़ने का कारण है– प्रतिस्पर्धा। जापान अमेरिका से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। जापान के लोग एक महीने का काम एक दिन में पूरा करना चाहते हैं। वे चलते नहीं दौड़ते हैं, वे बोलते नहीं बकते हैं। उनके जीवन में रफ़्तार है और उसी रफ़्तार को तेज़ और तेज़ करने के लिए मानो जापानियों ने अपने रफ़्तार को बनाए रखने के लिए दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगा लेते हैं। स्पीड का इंजन लगने पर दिमाग़ का तनाव इतना बढ़ जाता है कि पूरा इंजन ही टूट जाता है। इसी कारण से जापान में मानसिक रूप से रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। जापान के लोग लगभग 80% मनोविकार से ग्रसित हो गए हैं। यह समस्या अत्यंत गंभीर समस्या है। इस समस्या का समाधान है– शांति। लोगों को मानसिक शांति चाहिए तभी इस मानसिक विकार से संबंधित रोगों का समाधान होगा। जापानी मानसिक शांति पाने के लिए ही 'झेन की देन' परंपरा या चा-नो-यू जैसी विधियों को प्रयोग में लाए हैं।

Question 45.

'झेन की देन' के आधार पर लिखिए कि चाय पीने के बाद लेखक ने क्या परिवर्तन महसूस किया।

Answer:

चाय पीने के बाद लेखक के मन को असीम शांति मिली। वहाँ के वातावरण की तुलना लेखक ने जयजयवंती से की है। लेखक के दिमाग़ की रफ़्तार चाय पीते-पीते धीमी पड़ गई थी। लेखक के कानों में वहाँ का सन्नाटा भी गूँज रहा था। लेखक भूत और भविष्य को भूलकर वर्तमान में जीने लगा। उसे वर्तमान काल मानों अनंतकाल जैसा लगा, जहाँ शांति-ही-शांति थी।

Question 46.

'झेन की देन' में जापान में अधिकांश लोगों के मानसिक रोगी होने का क्या कारण दिया है? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

Answer:

लेखक के मित्र ने जापान में बढ़ते मानसिक रोग का मुख्य कारण बताया है– जापानियों द्वारा अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करना। इस प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने अपनी दैनिक कार्यों (दिनचर्या) की गति बढ़ा दी है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह काम नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया जाए, तो उनका मानसिक संतुलन बिगड़ना अवश्यंभावी है। मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें शांत एवं तनाव मुक्त रखना आवश्यक है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 47.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग़ से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था। और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।

(क) 'दोनों काल' से क्या तात्पर्य है? दोनों को मिथ्या क्यों कहा गया है?

(ख) 'वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।' कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) हमारे सामने सत्य क्या है?

Answer:

(क) 'दोनों काल' यानी भूतकाल और भविष्यकाल। लेखक ने दोनों कालों को मिथ्या कहा है क्योंकि एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है।

(ख) वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत और पवित्र था। वहाँ इतनी शांति थी कि लेखक हर चिंता से मुक्त होकर शांत वातावरण का आनंद ले रहा था। वह वर्तमान के उस क्षण में भूत और भविष्य को भूल चुका था।

(ग) हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है।

Question 48.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं, तब अपने आप से लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। अमेरिका से हम प्रतिस्पर्धा करने लगे। एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे। वैसे भी दिमाग़ की रफ़्तार हमेशा तेज़ ही रहती है। उसे 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हज़ार गुना अधिक रफ़्तार से दौड़ने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है, जब दिमाग़ का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है। यही कारण है, जिससे मानसिक रोग यहाँ बढ़ गए हैं।

(क) जीवन की रफ़्तार बढ़ने से लेखक का क्या आशय है?

(ख) जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगाने की बात क्यों कही गई है?

(ग) जापान में मानसिक रोग क्यों बढ़ने लगे हैं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) जीवन की रफ़्तार बढ़ने से लेखक का आशय है कि आज व्यक्ति के लिए आराम हराम है। आज व्यक्ति चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। एक महीने का काम व्यक्ति एक दिन में पूरा करने कोशिश करता है।

(ख) जापान में लोगों के जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। लोग चलते नहीं बल्कि दौड़ते हैं। यहाँ कोई बोलता नहीं बकता है। एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे हैं। जापानी हर-एक कार्य तुरंत और जल्द-से-जल्द करना चाहते हैं। इसीलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग़ में स्पीड का इंजन लगाने की बात कही है।

(ग) जापान में लोगों के जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है और अमेरिका से होड़ के कारण लोग महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे हैं। इसीलिए दिमाग़ का तनाव बढ़ जाता है। इसी कारण यहाँ मानसिक रोग बढ़ने लगे हैं।

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 49.

'ज़ेन की देन' के आधार पर बताइए कि जापानी लोगों को मानसिक बीमारियाँ अधिक क्यों होती हैं?

Answer:

लेखक के मित्र ने जापान में बढ़ते मानसिक रोग का मुख्य कारण बताया है– जापानियों द्वारा अमेरिका की आर्थिक गति से प्रतिस्पर्धा करना। इस प्रतिस्पर्धा के कारण जापानियों ने अपनी दैनिक कार्यों (दिनचर्या) की गति बढ़ा दी है। वे एक महीने का काम एक दिन में करने का प्रयास करते हैं, इस कारण वे शारीरिक व मानसिक रूप से बीमार रहने लगे हैं। लेखक के ये विचार सत्य हैं क्योंकि शरीर और मन मशीन की तरह काम नहीं कर सकते और यदि उन्हें ऐसा करने के लिए विवश किया जाए, तो उनका मानसिक संतुलन बिगड़ना अवश्यंभावी है। मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें शांत एवं तनाव मुक्त रखना आवश्यक है।

Question 50.

'पतझर में टूटी पत्तियाँ' पाठ के आधार पर 'टी-सेरेमनी' में चाय पीने वालों के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जापानी लोग 'टी सेरेमनी' को चा-नो-यू कहते हैं। 'टी सेरेमनी' का प्रबंध छह मंज़िला इमारत के सबसे ऊपर बनाई गई पर्णकुटी में था। जिसकी छत दफ़्ती की दीवारों वाली थी। वह चटाई की ज़मीन वाली एक सुंदर पर्णकुटी थी। बाहर एक बेढब-सा मिट्टी का बर्तन था। उसमें पानी भरा हुआ था, ताकि जो भी व्यक्ति इसमें प्रवेश करे वह हाथ-पाँव धोकर तौलिए से पोंछकर अंदर जाए। वहाँ बैठा मेज़बान उन्हें देखकर खड़ा हो गया। कमर झुकाकर उसने प्रणाम किया और स्वागत किया। बैठने की जगह दिखाकर उसने अँगीठी सुलगाई और उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से बरतन लाकर उसने उन्हें तौलिए से साफ़ किया। ये सभी क्रियाएँ इतने गरिमापूर्ण तरीके से की गईं कि ऐसा लगा माना चारों तरफ़ से जयजयवंती के सुर फूट रहे हों। वहाँ का वातावरण इतना शांत था कि चायदानी के पानी का खदबदाना भी सुनाई दे रहा था। चाय प्यालों में भरकर उनके सामने रख दी। इस पूरी प्रक्रिया में मुख्य बात थी शांति कायम रखना इसीलिए यहाँ तीन से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जाता है। प्यालों में दो घूँट से अधिक चाय नहीं होती और इसी चाय को दो-तीन घंटों में पिया जाता है। ताकि मानसिक शांति प्राप्त हो सके। भूत और भविष्यत काल की व्यर्थता से निकलकर मनुष्य वर्तमान काल की अनंतता में जीने लगता है। जहाँ वह अनेक चिंताओं से मुक्त होकर अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखता है। लेखक ने इसीलिए जापान की इस 'टी सेरेमनी' को महत्त्व दिया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in